# डॉ. हरभजन सिंह
# Dr. Harbhajan Singh

डॉ. हरभजन सिंह, जिन्हें साहित्य अकादेमी अपने सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* से अलंकृत कर रही है, पंजाबी के अग्रणी कवियों में सर्वमान्य और हमारे समय के विशिष्ट विद्वान आलोचक हैं।

डॉ. हरभजन सिंह का जन्म असम के एक छोटे और अनजान-से क़स्बे लुम्बडिंग में 1919 में हुआ। छुटपन में ही आपके माता-पिता चल बसे और इसी कारण आप एकाकी एवं अंतर्मुखी बालक के रूप में पले-बढ़े। स्कूली और कॉलिज की पढ़ाई लाहौर में करने के बाद आपने एक स्कूल में पढ़ाना शुरू किया। कई मुश्किलों से जूझते हुए और उत्साह खोये बिना आपने अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों में एम.ए. किया तथा 'ज्ञानी' की उपाधि के लिए अध्ययनरत रहे। गुरुमुखी में प्राप्त मध्यकालीन हिन्दी काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन कर आपने पी.एच.डी. प्राप्त की।

कविता लेखन की ओर हरभजन सिंह का रुझान काफ़ी पहले हो गया था। आपकी आरंभिक कविता पंजाबी में लिखी जा रही धार्मिक और राजनैतिक उद्‌बोधन वाली, कवि-सम्मेलनों या कवि-दरबारों में लोकप्रिय क़िस्म की कविता थी। अध्ययनशीलता के जरिये आप जल्दी ही एक प्रौढ़ कवि के रूप में स्थापित हुए और आपके काव्य-जगत में साधन एवं साध्य की पवित्रता का विशुद्ध आग्रह मुखर हुआ। आपकी पहली कविता पुस्तक *लासां* 1956 में प्रकाशित हुई। अपने आपको राजनैतिक मंच से अलग रखने के बावजूद इस दौरान लिखी हुई आपकी कविता में समाजवादी प्रभाव मिलता है। समाज के कमज़ोर तबक़ों के पूंजीवादी शोषण और निर्मम अत्याचार के विरुद्ध कवि-स्वर सहज काव्यात्मक रूपों में मुखर हुआ है।

आपकी अगली कृति तार *तुपका* (1957) एक लंबी नाट्य-कविता है जो वर्तमान समय में भीतरी और बाहरी दुनिया की बढ़ती जा रही बेचैनी से आंदोलित है। कभी न समाप्त होने वाले विषयों से मोहभंग के साथ यह कविता शुरू होती है लेकिन धीरे-धीरे करुणा और संवेदना के हरे-भरे वन-उपवन में पहुँचकर मोहभंग की तीक्ष्णता कम होती जाती है।

वर्ष 1951 से 1967 तक आप गुरु तेग़बहादुर खालसा कॉलिज, दिल्ली के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहे। बाद में आपने आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में पंजाबी के प्रोफ़ेसर पद का भार सँभाला और लगभग बीस वर्ष अध्यापन किया। वर्ष 1984 में कार्यमुक्त होने के बाद आपने एक साहित्यिक पत्र *अक्स* का सह-संपादन किया। आपने कई देशों की यात्राएँ की हैं और समकालीन भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पर विपुल लेखन करने के अलावा विभिन्न विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दिए हैं।

आपके अब तक पच्चीस से अधिक कविता-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें प्रमुख हैं : *अधरैनी* (1962), *ना धुप्पे ना छावें* (वर्ष 1964 के ।

Dr. Harbhajan Singh on whom the Sahitya Akademi confers its highest honour of Fellowship today is one of the foremost poets in Punjabi and also an outstanding scholar-critic of our time.

Harbhajan Singh was born in Lumbding, a small, sleepy town in Assam in 1919. He lost both of his parents in early childhood and naturally grew up as a lonely, introvert boy. He had his school and college education at Lahore and started teaching in a school. He did his M.A. both in English and Hindi fighting against several odds and dauntlessly pursued his higher studies to become a Gyani and then obtained his Ph. D. for a Critical Study of Medieval Hindi Poetry preserved in Gurumukhi.

Harbhajan Singh came to poetry at a very young age. His early poetry was a popular kind of religious and political rhetoric in Punjabi meant for presentation in poetry symposia. However, his academic excellence helped him mature early as a poet and his accent shifted towards a genuine poetic discourse marked by severe purity of means and purpose. His first book of poems *Lasan* (Weals) was published in 1956. Though he had kept himself away from the political arena, his poetry in this period betrays a socialist influence which made him register his angry protest against capitalist exploitation and heartless oppression of the weaker sections of the society, in simple imaginative structures.

His next book *Tar Tupka* (1957) is a long dramatic poem, strongly affected by a sense of our time with its growing restlessness in the inner and outer worlds. It starts on a note of disenchantment with never-to-be settled issues but it gradually loses its edge in the green forests of compassion and sympathy.

Between 1951 and 1967, Harbhajan Singh was on the Hindi faculty of Guru Tegh Bahadur Khalsa College, Delhi. Later he joined the Department of Modern Indian Languages of the Delhi University, as a Professor of Punjabi and taught there for nearly twenty years. After retiring from there in 1984, he co-edited *Aksa,* a literary journal, for a time. He is widely travelled and has lectured in several universities, besides writing extensively on contemporary Indian culture and literature.

Over 25 volumes of his poems published so far include *Adhraini* (1962), Na *Dhuppe Na Chhaven* (winner of the

लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त), *मैं जो बीत गया* (1970), *इक परदेसन प्यारी* (1973), *लहराँ नूँ जिन्दरे मारीं* (1983), *मेरी काव्य यात्रा* (1989), *चौथे दी उडीक* (1991), और *रूख ते रिशि* (1992)। आपका रचना संसार समग्र रूप में एक अनोखी कारयित्री प्रतिभा से हमारा साक्षात्कार कराता है जिसके कृतित्व ने कवि की आत्मनिष्ठा को सच्चा प्रमाणित किया है। आपका भव्य काव्यलोक शिल्प और कला में असंख्य प्रयोगों से आलोकित है।

पंजाबी काव्यालोचन के क्षेत्र में श्री हरभजन सिंह का योगदान इसी प्रकार विस्मयकर है। उनकी आरंभिक दो कृतियाँ *पंजाबी लिटरेचर : ए न्यू पर्सपेक्टिव* (1968) और *अध्ययन ते अध्यापन* (1970) अपने बीज-महत्व, अभिनव-दृष्टि और विवादास्पद साहित्यिक समस्याओं के वस्तुपरक मूल्यांकन के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें से पहली कृति में संपूर्ण पंजाबी साहित्य की सर्वांगीण विवीक्षा है और दूसरी कृति में भाषा के अध्ययन-अध्यापन से जुड़े विभिन्न पक्षों का विश्लेषण है। *मुल्ल ते मुल्लांकन* (1971), उनके ऐसे निबंधों का संकलन है जिसमें कविता के विवेचन एवं मूल्यांकन से जुड़ी पंजाबी समीक्षा की गहरी आलोचना के साथ गहन आत्मान्वेषण की सलाह दी गई है। समालोचना से सम्बन्धित अब तक आपके बीस से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें *साहित शास्तर* (1973), *सन्मान ते समिख्या* (खण्ड 1 और 2, 1986) और *खमोशी दा जज़ीरा* (1988) विशेष उल्लेखनीय हैं। *बुल्लेशाह* (1991) और *शेख फ़रीद* (1992) पंजाबी के इन दो अप्रतिम कवियों के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि के रूप में समर्पित कृतियाँ है जो अपने पांडित्य के नाते भी विशेष चर्चित रही हैं।

हरभजन सिंह ने विपुल अनुवाद भी किया है। आपने भारतीय एवं विदेशी भाषा की लगभग 15 कालजयी कृतियों का अनुवाद पंजाबी में किया है, जिनमें सोफ़ोक्लीज़ का *ईडीपस* (1960), गोर्की का *मेरे विश्वविद्यालय* और अरस्तू का *पोएटिक्स* (1964) सम्मिलित हैं। अभी हाल में एस. गोपाल की बहुचर्चित कृति *जवाहरलाल नेहरू* (1991) का पंजाबी अनुवाद आपने किया है। ऋग्वेद के 22 सूक्तों के पंजाबी रूपांतर *रिग्बानी* के लिए आपको राज्य सरकार का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

हरभजन सिंह आज उन सम्मानित भारतीय लेखकों में से एक हैं जो देश और विदेश में सुपरिचित हैं। सम्मान या पुरस्कार के लिए कभी उनके मन में सम्मोहन नहीं रहा लेकिन अपने यशस्वी कृतित्व के लिए उन्हें अनेकशः सम्मान पुरस्कार मिले हैं: साहित्य कला परिषद पुरस्कार (1973), पंजाब राज्य शिरोमणि पुरस्कार (1975) सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार (1976), हिन्दी और पंजाबी के लिए तृतीय विश्व सम्मेलन पुरस्कार (1983), कबीर सम्मान (1988) और वारिस शाह पुरस्कार (1992)। अभी हाल में पंजाबी साहित्य अकादेमी फ़ैलो के रूप में आप चुने गए हैं।

हरभजन सिंह के रचना-संसार का केन्द्र बिन्दु है मनुष्य और मानवता की चिन्ता। काव्य के क्षेत्र में आपकी लम्बी यात्रा को इस प्रतिबद्धता की संपुष्टि के रूप में देखा जा सकता है, जिसने आपको उत्कृष्ट कवि और श्रेष्ठ मनुष्य बनाया है।

कवि और विद्वान के रूप में श्रेष्ठ डॉ. हरभजन सिंह को साहित्य अकादेमी अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान करती है।

Sahitya Adademi Award for 1964), *Mai Jo Beet Gia* (1970), *Ik Paradesan Pyari* (1973), *Laiharan nun Jindre Na Marin* (1983), *Meri Kavya Yatra* (1989) *Chauthe Di Udeek* (1991) and *Rukh te Rishi* (1992). His poetry viewed as a whole in fact offers a glimpse into the journey of a creative genius whose magnificently transparent work has amply justified his trust in his own instincts. Over the years his poetry has flourished and the poet has been seen endlessly experimenting with form and craft.

Harbhajan Singh's contribution to the theory and practice of literary criticism in Punjabi is equally stupendous. His first two works, *Punjabi Literature : A New Perspective* (1968) and *Adhyan te Adhyapan* (1970) are noted for their foundational importance, innovative approach and objective assessment of the contoversial literary issues. While the former offers a comprehensive discourse on Punjabi literature as a whole, the latter dwells upon different aspects of learning and teaching the language. *Mull te Mullankan* (1971), a collection of his essays on the evaluation and appreciation of poetry is extremely critical of the criticism in Punjabi to which he recommends serious soul-searching. His nearly 20 books of criticism published so far include *Sahit Shastar* (1973), *Sanman te Samikya I and II* (1986), and *Khamoshi da Jazira* (1988). His two other books, *Bulleh Shah* (1991) and *Sheikh Farid* (1992) noted for their extensive erudition pay poignant tributes to the two outstanding poets of Punjabi literature.

Harbhajan Singh has also been a prolific translator. He has published some 15 translations of Indian and foreign classics into Punjabi which include Sophocles's *Oedipus* (1960), Gorky's *My Universities* and Aristotle's *Poetics* (1964). Among his recent undertakings is the translation of S. Gopal's much discussed book *Jawaharlal Nehru* into Punjabi (1991). *Rigbani*, his rendition of 22 suktas of the Rigveda into Punjabi has received the State Government award.

Harbhajan Singh is perhaps one of the most celebrated Indian writers today who has been widely acknowledged at home and abroad. Honours and Awards have never fascinated him but his glorious achievements in the field have brought him many, which include Sahitya Kala Parishad award (1973), Punjab State Shiromani award (1975), Soviet Land Nehru Award (1976), Third World Conference award for Hindi and Punjabi (1983), Kabir Samman (1988) and Waris Shah Award (1992). Recently, he has been nominated Fellow, Panjabi Sahitya Academy.

At the centre of Harbhajan Singh's creative universe is his concern for man and humanity. His long journey into the realm of poetry comes only as an affirmation of this commitment, which makes him a fine poet and a great human being.

For his eminence as a poet and a scholar, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Dr. Harbhajan Singh.